

۱۰۸-۱۰۹

**فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ**

تو ઈસસે ઝૂયાદા ઝાલિમ કોન હૈ, જો જૂટ લગાએ અલ્લાહ પર, ઓર જુટલા દિયા સચ્ચાઈકો, જબ આ ગઈ

**جَاءَهُ ۖ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۖ وَالَّذِي جَاءَ**

ઉસકે પાસ. કયા નહીં હૈ જહન્નમમં ઠિકાના કાફિરોંકા ? (૩૨) ઓર જો લાયા

**بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۖ لَهُمْ مَا**

સચ્ચાઈકો, ઓર તસ્દીકકી ઉસકી, વોહી પરહેઝગાર હૈ (૩૩) ઉંહીકે લિયે હૈ

**يَشَاءُونَ ۖ وَعِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۖ لِيُكَفِّرَ**

જો ચાહેં અપને રબકે યહાં. યહ ષવાબ હૈ એહસાનવાલોંકા (૩૪) તાકિ ઉતારદે

**اللَّهُ عَنْهُمْ ۖ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا ۖ وَيَجْزِيهِمْ ۖ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ**

અલ્લાહ ઉનસે બડીસે બડી બુરાઈ જો ઉંહોંનેકી, ઓર ષવાબ દે ઉંહેં બડીસે બડી નેકીકા

**الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَ**

જો કર ચુકે થે (૩૫) કયા નહીં હૈ અલ્લાહ કાફી અપને બન્દોંકો ? ઓર

**يُخَوِّفُونَكَ ۖ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۖ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ**

ડરાતે હૈં તુમકો ઉનસે, જો અલ્લાહકે ખિલાફ હૈં. ઓર જિસકો બેરાહ રખે અલ્લાહ, તો નહીં હૈ

**مِنْ هَادٍ ۖ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ ۖ أَلَيْسَ**

ઉસકા કોઈ રાહ દેનેવાલા (૩૬) ઓર જિસે રાહ દે અલ્લાહ, તો નહીં ઉસકા કોઈ ગુમરાહ કરનેવાલા. કયા નહીં હૈ

**اللَّهُ بِعِزِّ ذِي الْقِيَامَةِ ۖ وَلَٰئِن سَأَلْتَهُمْ ۖ فَنَنْخَسِنَ ۖ وَأَنزَلْنَا**

અલ્લાહ ઈજ્જતવાલા ઈન્તિકામ લેનેવાલા ? (૩૭) ઓર અગર પૂછા તુમને ઉનસે, કિ કિસને પૈદા કિયા આસ્માનોં

**وَالْأَرْضَ ۖ لَيَقُولُنَّ ۖ اللَّهُ ۖ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ ۖ مِنْ**

ઓર ઝમીનકો, તો ઝરૂર કેહ દેંગે કિ અલ્લાહ. પૂછો કિ ઝરા બતાઓ, કિ જિસકી દુહાઈ દેતે હો અલ્લાહકે

**دُونِ اللَّهِ ۖ إِنَّ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ ۖ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّي**

ખિલાફ, અગર અલ્લાહને ચાહા મુઝે નુક્સાન પહોંચાના, તો કયા વોહ ઉસકી નુક્સાન રસાનીકો દૂર કર દેંગે ?

**أَوْ أَرَادَنِيَ بِرَحْمَةٍ ۖ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ ۖ قُلْ حَسْبِيَ**

યા અલ્લાહને ચાહા મુઝ પર રહમત ભેજના, તો કયા વોહ ઉસકી રહમતકો રોક દેંગે ? કહો, કિ “કાફી હૈ

اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿۳۸﴾ قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَيَّ

मुझे अल्लाह। उसी पर भरोसा रखें (उ८) केह दो कि मैं मेरी टीम तुम लोग कर गुजरो

مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿۳۹﴾ مَنْ يَأْتِيَنَّكَ عَذَابٌ

अपनी जगह, मैं भी अपना अमल कर रहा हूँ। तो जल्द ही जान लोगे (उ८) कि कौन है कि आता है उस पर अजाब,

يُجْزِيهِ وَيَجِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿۴۰﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ

जो रुखा कर दे उसे, और उतरे उस पर ठहर जानेवाला अजाब (४०) बेशक हमने उतारा तुम पर किताबको

لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۖ فَمِنْ أُمَّتٍ أُمَّتِي فَلِنَفْسِي ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا

सब लोगोंके लिये बिल्कुल सच। तो जिसने छिदायत पाई, तो अपने ही भलेको। और जो भ्रष्ट हुआ, तो अपने

يَضِلُّ عَلَيْهِهَا ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٌ ﴿۴۱﴾ اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ

भुरेको भेराह होता है। और नहीं तुम उनके जिम्मेदार (४१) अल्लाह पूरी कर देता है जिन्दगियोंको

حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي

उनकी मौतके वक्त, और जिन्हें जागते मौत न आई, तो उसके सोतेमें। युना-ये रोक लेता है जिस

قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ

का फैसला इरमा दिया मौतका, और छोड देता है बाकीको मुकरर भीआए तक।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿۴۲﴾ أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ

बेशक इसमें जरूर निशानियां हैं उनके लिये जो सोचें (४२) क्या बना लिया उन्होंने अल्लाहके भिलाइको

اللَّهِ شُفَعَاءَ ۗ قُلْ أُولَٰئِكَ لَا يَسْتَلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿۴۳﴾

अपने सिफारिशी। पूछो कि क्या गो न इप्तिथार रखें किसी चीजका, और न अकल रखें ? (४३)

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۗ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ثُمَّ

केह दो कि अल्लाह हीके हाथमें है सारी सिफारिश। उसीकी है शाही आस्मानों और जमीनकी। फिर

إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۴۴﴾ وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ

उद्दीकी तरफ लौटाये जाओगे (४४) और जब जिक्र किया गया अक अल्लाहका, तो सिकुड गये दिल उनके,

الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۗ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ

जो नहीं मानते आभिरतको। और जब यादकी गई उनकी जो अल्लाहके भिलाइ हैं,

إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿۳۵﴾ قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ

उस वक्त वोड भुश छोते हें (४५) तुम कछो, कि “या अल्लाह ! बनानेवाला आस्मानों और जमीनका,

عِلْمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا

जाननेवाला गैब व शहादतका, तू कैसला इरमायेगा अपने भन्दोंके दरमियान, जिसमें वोड

فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿۳۶﴾ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا

जगडा करते थे” (४६) और अगर वाकेर छो जाये उनका जिन्दोंने अंधेर मचाया था जो कुछ हे जमीनमें सब,

وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَاؤًا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ

और उतनी ही और उसके साथ, तो जरूर हे डालते छुटकारेको भुरे अजाबसे, क्यामतके दिन.

وَبَدَأَ اللَّهُ مِّنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿۳۷﴾ وَبَدَأَ اللَّهُ سَيِّئَاتِ

और आदिर हुवा उन्हें अल्लाहकी तरफसे, जिसका गुमान न करते थे (४७) और आदिर छो गंठ उन्हें

مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿۳۸﴾ فَلَمَّا مَسَّ

जो कमा चुके थे भुराईयां, और इट पडा उन पर जिसका मजाक उडाते थे (४८) तो जब पडोया

الْإِنْسَانَ صُرَّدَ عَاثًا ۗ ثُمَّ إِذَا حَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۗ قَالَ إِنَّمَا

ईसानको नुकसान, “तो दुहाई देने लगा मेरी,” इर जब ही डमने उसे कोरि ने’मत अपनी तरफसे, तो बोला, कि “भुजे

أَوْ تَيْبَتْهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۗ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلٰكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۳۹﴾

भस दिया गया हे यड ईल्मकी बिना पर.” बल्कि वोड ने’मत अेक आज़माईश हे. लेकिन उनके बोहतेरे नादान हें (४९)

قَدْ قَالُوا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَمَا أَخْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا

बेशक यड केड चुके हें, जो उनसे पहले हुअे, तो नहीं काम उनके जो

يَكْسِبُونَ ﴿۴०﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۗ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا

कमाते थे (५०) तो पडोयी उन्हें भुराईयां उसकी जो कमाया था. और जिन्दोंने अंधेर कर रभा हे,

مِن هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۗ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿۴१﴾

उन लोगोंमेंसे जल्दसे जल्द पडोयेगी उन्हें भी भुराईयां उसकी जो कमा रभा हे, और नहीं हें यड डरा सकनेवाले (५१)

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ

क्या उन्होंने न जाना, कि बिवाशुभड अल्लाह कुशादगी देता हे रोजीकी जिसे चाहे ? और तंगी भी देता हे. बेशक

فِي ذَلِكَ لَأَيُّتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿۵۶﴾ قُلْ يُعْبَادِيَ الَّذِينَ

उसमें ज़रूर निशानियां हैं उनके लिये जो मानें (५२) तुम यूँ कछो, कि ओ मेरे वोह बन्दो, जिन्होंने

أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ

ज्याहतीकी है अपनी जानों पर, “नाउम्मीद न हो अल्लाहकी रहमतसे.” बेशक अल्लाह बग्श

يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۗ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿۵۷﴾ وَأَنبِئُوا

देता है सारे गुनाहोंको. कि यकीनन वोही बग्शनेवाला रहमवाला है (५३) और तौबा कर ढालो

إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلُوا اللَّهَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ۚ ثُمَّ

अपने रबकी तरफ़, और गरदन जुका दो उसके लिये कबल उसके, कि आओ तुम पर अजाब, फिर तुम्हारी

لَا تُنصَرُونَ ﴿۵۸﴾ وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ

महद न की ज्ञाओगी (५४) और पैरवी करो उस बेहतरीकी, जो उतारा गया तुम लोगोंकी तरफ़ तुम्हारे रबकी

مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً ۖ وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿۵۹﴾

तरफ़से, कबल उसके, कि आओ तुम पर अजाब अचानक, और तुमको ખबर ही न हो (५५)

أَن تَقُولَ نَفْسٌ يُحْسِرُنِي عَلَىٰ مَا فَرَّطْتُ فِي جَنَابِ اللَّهِ

यह कि बोले परे कोठे ज्ञान, कि हाओ अफ़सोस इस पर जो जियाहतीकी मेंने अल्लाहके भारमें,

وَإِن كُنْتُ لَمِنَ السَّخِرِينَ ﴿۶۰﴾ أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي

और था में मस्भरोंसे (५६) या बोले परे, कि “अगर अल्लाहने ढिदायतकी छोती

لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿۶۱﴾ أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَىٰ الْعَذَابَ لَوْ

मेरी, तो में ली छोता डरनेवालोंसे” (५७) या केह परे जब देभ ले अजाबको, कि “अगर मेरी

أَنَّ لِي كَرَّةٌ فَآكُونُ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿۶۲﴾ بَلَىٰ قَدْ جَاءَ تَكْ

वापसी हो तो, हो ज़ाँ अहसानवालोंसे” (५८) हां क्यूँ नहीं ! यकीनन आँ

أَيْتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِينَ ﴿۶۳﴾ وَ

तेरे पास मेरी आयतेँ, तो जुटवा दिया तूने उसे, और गुज़र किया और रहा काकिरोँसे (५९) और

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَىٰ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ اللَّهِ وَجُوهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ

क्यामतके दिन देभोगे उन्हेँ, जिन्होंने जूट रभा अल्लाह पर, कि उनके चेहरे सियाह कर दिये गओ हैं.

الَّذِينَ فِي جَهَنَّمَ مَمْتُورِي لَلْسَتِكَبِيرِينَ ۝۴۰ وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ

क्या नहीं है जहन्नममें ठिकाना मगड़ोंका ? (६०) और नजात देगा अल्लाह उन्हें, जो

اتَّقُوا بِمَقَازِرِهِمْ لَا يَكْسِبُهَا السَّوْءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝۴۱ اللَّهُ

उरा किये, उनकी कामियाबीके सबब. न पछोये उन्हें कोई सप्ती, और न वोह रन्जदा हों (६१) अल्लाह पैदा

خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝۴۲ لَهُ مَقَالِيدُ

इरमानेवाला है हर याहेका. और वोह हर अकका कारसाज है (६२) उसीकी हैं कुञ्जियां

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ

आस्मानों और जमीनकी. और जिन्होंने ईशकार किया अल्लाहकी आयतोंका, वोही भसारे

الْحٰسِرُونَ ۝۴۳ قُلْ أَغْيَرَ اللَّهُ تَأْمُرًا وَرَيًّْا أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ۝۴४

वाले हैं (६३) केह दो कि क्या अल्लाहके गैरके बिये तुम लोग केहते हो मुझे कि मैं पूजूं ? औ ज़ाहिलो (६४)

وَلَقَدْ أَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِن أَشْرَكْتَ

और भेशक वही भेज गई तुम्हारी तरफ और जो तुमसे पहले हूँ, कि अगर शरीक बनाते तुम, तो जरूर अकारत

لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ ۝۴५ بَلِ اللَّهُ فَاعِبُدْ

जाते तुम्हारे अमल, और यकीनन हो जाते तुम भसारेवालोंसे (६५) बल्कि अल्लाहको तो पूजते रहो

وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝۴६ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۝۴७

और हो शुकगुजारोंसे (६६) और नहीं करकी उन्होंने अल्लाहकी, जैसा कि उसका हक है. और

الْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيٰتٌ

जमीन सारी उसकी मुट्ठीमें है कयामतके दिन, और सारे आस्मान लपेटे हूँ उसके

بِيَمِينِهِ ۝۴८ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝۴९ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ

हस्ते कुदरतमें हैं. पाकी है उसकी, और वोह बुलन्दो बावा है उससे जो शरीक बनाते हैं (६७) झूका गया सूरमें

فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ

तो बेहोश हो गये, जो आस्मानोंमें हैं और जो जमीनमें हैं, लेकिन जिसे अल्लाहने याहा.

اللَّهُ ۝۵० ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ ۝۵१ فَاذًا هُمْ قِيٰمًا يَنْظُرُونَ ۝۵२

झिर झूका गया उसमें दोबारा, तो उस वक्त वोह सब भरे देभ रहे होंगे (६८) और

أَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِئَتْ

ચમક ઉઠી ઝમીન, અપને રબકે નૂરસે, ઓર રબ દિયા ગયા નવિશ્તા, ઓર લાએ ગએ

بِالنَّبِيِّينَ وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا

અમ્બિયા ઓર ઉનકે ગવાહ, ઓર ફેસલા હો ગયા ઉનકે દરમિયાન બિલ્કુલ ઠીક, ઓર વોહ નહીં ઝુલ્મ કિયે

يُظْلَمُونَ ﴿۳۹﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا

જાએંગે (૬૮) ઓર પૂરા પૂરા દિયા જાએગા હર એક, જો કુછ કર રખા હે. ઓર વોહ ખુબ જાનતા

يَفْعَلُونَ ﴿۴۰﴾ وَسَيِّقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا

હે જો કુછ કર રહે હે (૭૦) ઓર હાંકે ગએ જિન્હોને કુફ્ર કિયા જહન્નમકી તરફ ગિરોહ ગિરોહ. યહાં તક કિ

جَاءَ وَهِيَ مُفْتَحَةٌ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ

જબ આ ગએ વહાં, તો ખોલ દિયે ગએ ઉસકે દરવાઝે, ઓર કહા ઉન્હે ઉસકે સબ દારોગાને, કિ “કયા નહીં

مِّنْكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُم وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ

આએ તુમહારે પાસ રસુલ હઝરાત તુમમેસે, તિલાવત કરતે તુમ પર તુમહારે રબકી આયતોંકો, ઓર ડરાતે તુમકો

هَذَا قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَاتُ الْعَذَابِ عَلَىٰ الْكَافِرِينَ ﴿۴۱﴾

તુમહારે ઉસ દિનકે મિલનેસે,” સબને જવાબ દિયા કિ “કયું નહીં”, લેકિન દુરુસ્ત નિકલી અઝાબકી બાત કાફિરોં પર (૭૧)

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوَىٰ

કહા ગયા કિ “દાખિલ હો જહન્નમકે દરવાઝોંમેં, હમેશા રહનેવાલે ઉસમેં.” તો કિતના બુરા ઠિકાના હે

الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿۴۲﴾ وَسَيِّقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَىٰ الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ

મગરોંકા (૭૨) ઓર ચલાએ ગએ જો ડરાતે થે અપને રબકો, જન્નતકી તરફ ગિરોહ ગિરોહ.

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ وَهِيَ مُفْتَحَةٌ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ

યહાં તક કિ જબ આએ વહાં ઓર ખોલ દિયે ગએ ઉસકે દરવાઝે, ઓર કહા ઉન્હે ઉસકે સબ દારોગાને, કિ સલામ હો

عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوا خَالِدِينَ ﴿۴۳﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي

તુમ પર, તુમ ખુબ રહે, તો જાઓ ઉસમેં હમેશા રહનેકો (૭૩) ઓર ઉન સબને કહા, કિ “સારી હમ્દ અલ્લાહકી, જિસને

صَدَقْنَا وَعَدَّهُ وَأَوْزَيْنَا الْأَرْضَ نَتَّبِعُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ

સચ કર દિખાયા હમેં અપના વા'દા, ઓર વારિષ બના દિયા હમેં ઈસ સરઝમીનકા, કિ રહેં હમ જન્નતમેં જહાં

نَشَاءٍ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمَلِينَ ﴿۵۶﴾ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِينَ مِنْ

याहें." तो कितना अच्छा पवाब है काम करनेवालोंका (७४) और देभोगे इरिशतोंको घेरे हुअे अशकि गिर्दा गिर्द,

حَوْلَ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ

पाकी भोलते हें अपने रबकी उम्हके साथ. और ईसला कर दिया गया सब लोगोंके दरमियान बिटकुल उक,

وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ ﴿۵۷﴾

और कहा गया कि सारी उम्ह अल्लाहकी परवरदिगार सारे जडानका (७५)

سُورَةُ الْمُؤْمِنِينَ ۴۰ مَكِّيَّةٌ ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْبَيْتِ ۱۸۵

सूरअे मो'मिन मकिक्क्या

नामसे अल्लाहके बडा महरभान बप्शनेवाला

आयात ८५ रुकुअ ८

حَمًّا ۖ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿۵۸﴾ غَاوِرِ الدَّنْبِ

डा-भीम.. (१) यड उतारना ँस किताबका ँजुजतवाले ँल्मवाले अल्लाहकी तरफसे है (२) गुनाहका बप्शनेवाला

وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ۖ ذِي الطَّوْلِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

और तौबाका कबूल इरमानेवाला सप्त अजाबवाला, करमवाला. नही है कोर पूजनेके काबिल उसके सिवा.

إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿۵۹﴾ مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا

उसीकी तरफ इरना है (३) नही जगडते अल्लाहकी आयतोंमें, मगर जिन्होंने कुफ़ किया,

فَلَا يَخْرُكُ تَقْدِيرَهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿۶۰﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَ

तो धोका न दे सके तुम्हें उनका यलते इरने रहना शडरोंमें (४) जुटलाया था उनसे पडले कीमे नूहने और

الْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ

कई उम्मतोंने उनके भा'द. और कस्ट किया डर उम्मतने अपने अपने रसूलको, कि गिरइतार करें उनहें

وَجَدُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ

और जगडते रहे बेकार बातोंसे, ताकि डगमगा दें उससे उकको, तो मैंने पकडा उनहीको... तो कैसा

كَانَ عِقَابُ ۖ ﴿۶۱﴾ وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ

हुवा मेरा अजाब ? (५) और ँसी तरड ठीक हो गई तुम्हारे रबकी बात उन पर, जिन्होंने

كَفَرُوا إِنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ

कुफ़ किया, कि बिवाशुभड वोड जड-नमवाले हें ..(६).. जो उठाअे हें अशको, और जो

﴿۵۶﴾

﴿۵۷﴾

حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ

उसके गिर्दा गिर्दा हैं, पाकी बोलते हैं अपने रबकी उम्हके साथ, और मानते हैं उसे, और मफ़िरत यादते हैं

لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ

उनकी जो मान गअे हैं, कि “परवरदिगारा समो दिया तूने हर चीजमें अपनी रहमत व एल्म, तो बफ़्शदे उन्हें जिन्होंने

لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ رَبَّنَا

तौभाकी, और यले तेरी राह, और बयाले उन्हें जहन्नमके अजाबसे (७) परवरदिगारा और

وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ

दाबिल इरमा उन्हें हमेशाकी जन्नतोंमें, जिसका वा'दा दिया तूने उन्हें, और जो लियाकत मन्द हूअे उन

آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ ۸

के बापदादों और भीबियों और औलादमेंसे. बेशक तू ही एज्जलतवाला छिकमतवाला है (८)

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۚ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۚ

और बयाले उन्हें गुनाहोंसे. और जो बय निकले गुनाहोंसे उस दिन, तो बेशक तूने रहम इरमाया उस पर.

وَذَلِكَ هُوَ الْقَوْرُ الْعَظِيمُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادُونَ لَمَقَّتْ

और यही बडी कामियाबी है” (९) बेशक जिन्होंने कुफ़ किया, पुकार दिये जाअेंगे कि यकीनन अद्लाहकी

اللَّهُ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ

बेजारी कर्ही ज़यादा बडी है तुम्हारी भुद अपनी जातसे बेजारीसे, कि जब बुलाअे जाते तुम एमानकी तरफ़, तो

فَتُكْفَرُونَ ۝ ۱۰ قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا آتَيْنَاكَ آتَيْنَا

एन्कार कर देते (१०) बोल पडे, कि “परवरदिगारा तूने मुर्दा रभा हमें दोबार, और जिन्दा किया दोबार, अब एन्कार कर

فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ۝ ۱۱ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ

लिया हमने अपने गुनाहोंका, तो क्या यहाँसे निकलनेकी कोर राह है ?” (११) यह एस लिये कि

إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ ۚ وَإِنْ يُشْرَكَ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ

बिलाशुबह जब हुडाई दी जाती सिर्फ़ अद्लाहकी, तो तुमने एन्कार जादिर किया, और अगर शरीक बनाया जाता उसका, तो तुमलोग मान

بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝ ۱۲ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ

जाते, तो हुकम अद्लाहका है सबसे बुलन्द बडा (१२) वोही है जो दिभाता है तुम लोगोंको अपनी निशानियां, और उतारता है

السَّمَاءِ رِجًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنذِرُ ۗ فَادْعُوا اللَّهَ

तुम्हारे लिये आस्मानसे रोजी, और नहीं नसीहत पाता मगर जो तोबा करे (१३) “तो दुहाई दो अल्लाहकी

مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۗ رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ

मुख्लिसाना अकीदा रखते, गो भुरा मानें काफिर लोग” (१४) भुल-द इरमानेवाला दरजोंको,

ذُو الْعَرْشِ ۗ يُلْقِي الرُّوسَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ

अर्शवाला, भेजता है इहुल अमीनको अपने हुकमसे जिस पर चाहता है अपने बन्दोंसे,

لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۗ يَوْمَ هُمْ بَرْزُورٌ ۗ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ

ताकि वोह उरा दे सभके मिलनेके दिनसे (१५) जिस दिन वोह सभ भुल्लम भुल्ला हें... न छुप सके अल्लाह पर उनमें

مِنْهُمْ شَيْءٌ ۗ لَيْسَ الْمَلِكُ الْيَوْمَ ۗ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۗ الْيَوْمَ

से कोई. “किसकी बादशाही है आज ? सिर्फ अल्लाह वाहिदे कइलारकी (१६) आजके दिन

مُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ لَا ظَلَمَ الْيَوْمَ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ

भदला दिया जायेगा हर अके, जो कमा चुका है. नहीं ज़्यादाती होगी आज.” भेशक अल्लाह जल्द हिसाब इरमाने

الْحِسَابِ ۗ وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْأَزْفَرِ ۗ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ

वाला है (१७) और उराओ उन्हे जल्द आनेवाली मुसीबतके दिनसे, जबकि उनके दिल गलोंके पास

كُظْمِينَ ۗ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَسِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۗ يُعَلِّمُ

होंगे गमनाक... नहीं रहा ज़ाविमोंका कोई दोस्त और न सिफारिशी, जिसका कडा माना जाये (१८) अल्लाह जानता है

خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفَى الصُّدُورُ ۗ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ

आंभोंकी चोरीको, और जो छुपाये रखते हें सीने (१९) और अल्लाह कइसला इरमाता है बिल्कुल ठीक,

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ

और जिनकी दुहाई देते हें उसके भिलाफ, नहीं कइसला कर सकते कुछ. भेशक अल्लाह ही

هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۗ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ

सुननेवाला देखनेवाला है (२०) क्या उन्होने सैर नहींकी जमीनमें ? कि देखें

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ

कि कइसा अ-जाम हुवा उनका जो उनसे पहले थे. और ज़्यादा थे उनसे कुव्वतमें,

قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمُ

और जमीनमें अपनी छोड़ी निशानियोंमें, तो पकड़ा उन्हें अल्लाहने उनके गुनाहोंके सभब. और न रखा उनका अल्लाह

عِنَ اللَّهِ مِنْ وَاِقٍ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ

से कोई बयानेवाला (२१) यह इस लिये कि आते रहे उनके पास उनके रसूल निशानियोंके साथ,

فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۗ وَقَدْ أَرْسَلْنَا

तो उन्होंनेने ईशकार कर दिया, तो पकड़ा उन्हें अल्लाहने. बेशक वोह कुव्वत वाला सप्त अजाबवाला है (२२) और बेशक बेज्र हमने

مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۗ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَ

मूसाको निशानियों और भुली सनहके साथ (२३) फिरऔन व हामान व

قَارُونَ فَقَالُوا سِحْرٌ كَذٰبٌ ۗ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا

काउनकी तरफ, तो वोह सब बोले कि यह जादूगर भडे जूटे हैं (२४) फिर जब लाये उनके पास हकको हमारी तरफसे,

قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا

तो बोले कि कत्ल कर दो उनके भेटोंको, जो ईमान लाये उनके साथ, और जिन्दा रभो उनकी औरतोंको.

كَيْدُ الْكٰفِرِينَ ۗ الْآلِ فِي ضَلٰلٍ ۗ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ

और नहीं रही खालबाजी काकिरोंकी, मगर बेकार (२५) और बोला फिरऔन, कि “मुझे छोड दो कि कत्ल कर दूं

مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۗ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ

मूसाको, और वोह हुंछाई हें अपने रभकी. कि मैं ज़रूर डरता हूं कि बदल हें तुम्हारा दीन, या कि भुल्लम भुल्ला

يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۗ وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي

करें जमीनमें फ़साद” (२६) और कहा मूसाने, कि “बेशक मैंने पनाह ली अपने रभ और तुम

وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۗ وَقَالَ رَجُلٌ

लोगोंके रभकी, हर जैसे मगरउरसे जो न माने हिसाबके दिनकी” (२७) और बोला अक शप्स मुसल्मान आले

مُؤْمِنٍ ۗ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ

फिरऔनसे, जो छुपाये रभता है अपने ईमानको, कि “क्या कत्ल करोगे उस भईको ? यूं कि केहते हैं कि मेरा

يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَإِنْ يَكُ

रभ अल्लाह है, हावांकि वोह भिलाशुभल लाये तुम्हारे पास शैशन दलीलें तुम्हारे रभकी तरफसे, और अगर यह जूटे

۲  
۸

كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۚ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي

હોતે, તો ઉન પર ઉનકા જૂટ પડતા. ઓર અગર સચ્ચે હેં, તો પહોંચ જાએગા તુમ્હે કુછ ઉસકા જિસકા

يَعِدُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿۳۸﴾ يَقَوْمِ

વા'દા દેતે હેં તુમ્હે. બેશક અલ્લાહ નહીં રાહ દેતા ઉસકો, જો હદસે બઢનેવાલા બડા જૂટા હે (૨૮) ઐ મેરી કૌમ

لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ يَبْصُرْ تَأْمِنَ بِأَس

તુમ્હારી બાદશાહી હે આજ, ગાલિબ હો ઝમીનમેં, તો કૌન મદદ દેગા હમેં અલ્લાહકે અઝાબસે, અગર આ ગયા

اللَّهُ إِنْ جَاءَنَا قَاتِلٌ فَدَعُونُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْبَيْتُمْ

હમારે ઊપર.” બોલા ફિરઓન, કિ “મેં વોહી રાય દેતા હૂં જો મેરી રાય હે, ઓર નહીં બતાતા તુમ્હે

إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ﴿۳۹﴾ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ

મગર ભલાઈકી રાહ” (૨૯) ઓર કહા ઉસને જો મુસલમાન થા, કિ “ઐ મેરી કૌમ મેં તો

عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ﴿۴۰﴾ مِثْلَ دَابِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَ

ઝરૂર ડર રહા હૂં તુમ પર પહલે ગિરોહોંકે દિનકી તરહ હોનેકો” (૩૦) જેસા ઢંગ રહા નૂહકી કૌમ ઓર આદ વ

ثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظَلْمًا لِلْعِبَادِ ﴿۴۱﴾ وَ

પમુદ, ઓર જો ઉનકે બા'દ હૂએ સબકા. ઓર અલ્લાહ નહીં ચાહતા ઝુલ્મ બન્દોંકે લિયે (૩૧) “ઓર ઐ

يَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿۴۲﴾ يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ ۗ مَا

મેરી કૌમ બેશક મેં ડર રહા હૂં તુમ પર પુકાર મચનેકે દિનકો” (૩૨) જિસ દિન કિ ફેર દિયે જાઓગે પીઠ દિખા કર.

لَكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۗ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿۴۳﴾

નહીં હે તુમ્હારા અલ્લાહસે કોઈ બચાનેવાલા. ઓર જિસે બેરાહ રખે અલ્લાહ, તો નહીં હે ઉસકા કોઈ રાહ દેનેવાલા (૩૩)

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكِّ

ઓર બેશક લાએ તુમ્હારે પાસ યૂસુફ પહલેસે રૌશન નિશાનિયાં, તો તુમ લોગ હમેશા રહે શકમેં જિસકો લાએ

فَمَا جَاءَكُمْ بِهِ ۗ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ نَبْعَثَ اللَّهَ مِنْ بَعْدِهِ

થે તુમ્હારે પાસ. યહાં તક કિ જબ વોહ ન રહે, તો તુમ લોગોંને કહા કિ હરગિઝ ન ભેજેગા અલ્લાહ ઉનકે બા'દ

رَسُولًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُرْتَابٌ ﴿۴۴﴾ الَّذِينَ

કોઈ રસૂલ. ઈસી તરહ બેરાહ રખતા હે અલ્લાહ ઉસે, જો હદસે બઢા શકી હે (૩૪) જો ઝગડા

يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَتْهُمْ كَبْرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ

निकावें अस्वाहकी आयतोंमें बगेर किसी सनदके, जो आठ हो उनके पास. यह बहोत बरी बेजारीका सबब है

وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى كُلِّ قَلْبٍ مُتَكَبِّرٍ

अस्वाहके नजदीक, और उनके नजदीक जो ईमान ला युके. इसी तरह छाप लगा देता है अस्वाह हर मग़र सरकशके

جَبَّارٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَامَانَ ابْنِ بَنِي صَرَحَالَعَلَيْ أَبْلُغِ الْأَسْبَابَ ۝

दिवों पर (३५) और बोला फिरऔन, कि “अै हामान बना लो मेरे लिये बुलन्द घर, ताकि पड़ोय ज़ाँ सभ रास्तों तक (३६)

أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَاطَّلِعْ إِلَى إِلَهِ مُوسَى وَإِنِّي لَأَكْفُؤُهُ كَادِبًا ۝

आस्मानोंके रास्ते, फिर ज़ाँ मूसके मा'बूदकी तरह, और मैं तो ज़र भयाल करता हूँ उन्हें झूटा.” और इसी तरह

كَذَلِكَ زَيْنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءِ عَمَلِهِ وَصَدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۝ وَمَا كَيْدُ

से (बली करदी गइ फिरऔनकी नज़रमें उसकी बदकिरदारी, और रोक रभा गया राहसे. और नहीं थालबाज़ी

فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَ اتَّبَعُونَ أَهْدِكُمْ

फिरऔनकी, मगर गारत की हूँ (३७) और बोला जो ईमान ला युका था, कि “अै मेरी कौम तुम लोग मेरे पीछे

سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ يَقَوْمِ إِنَّمَا هِيَ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ

पीछे रहो, तो हूँगा तुम्हें (बलाईकी राह (३८) अै मेरी कौम यह दुन्यावी जिन्दगी मडल कुछ रह सड लेना है.” और भेशक

الْآخِرَةُ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝ مَنْ عَمِلَ سَيِّئًا فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا ۝

आभिरत ही ठहरनेका घर है (३९) जिसने बुराईकी, तो न बदला दिया जायेगा मगर उतना ही, और

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْتَهَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ

जिसने सवाहियतके काम किये, मर्द या औरत, और वोड मुसल्मान हैं, तो वोड दाखिल होंगे जन्नत

الْجَنَّةِ يَرْزُقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَيَقَوْمِ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَىٰ

में, रोजी दिये जायेगे उसमें बेहिसाब (४०) “और अै मेरी कौम मुजे क्या है, कि मैं बुलाता हूँ तुम्हें

التَّجْوَةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ۝ تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ

नजातकी तरह, और तुम लोग बुला रहे हो मुजे जहन्नमकी तरह (४१) तुम बुलाते हो मुजेके ईन्कार कर हूँ अस्वाहका, और शरीक

بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيمِ الْعَقَارِ ۝ لَاجِرَمَ

बनाई उसका उसे, जिसका मुजे कुछ ईल्म नहीं, और मैं बुला रहा हूँ तुमको ईज़तवाले गइकारकी तरह (४२) बस यही है

أَلَمْ تَدْعُونِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَ

कि जिसकी तरफ़ तुम लोग बुलाते हो मुझे, नहीं है उसकी कोई बलाहट दुन्यामें और न आभिरतमें, और

أَنْ فَرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ فَسْتَدْرِكُونَ

बेशक हमें लौटना है अल्लाहकी तरफ़, और बेशक ज़्यादाती करनेवाले ही जहन्नमी हैं (४३) तो अब जहद ही याद करोगे

مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَفِئْضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۖ قَوْلُهُ

जो केड रखा हूँ मैं तुम्हें, और सुपुर्द करता हूँ अपने मुआमलेको अल्लाहके, बेशक अल्लाह निगरां है बन्दोंका” (४४) तो बया लिया उसको

اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكْرُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۖ النَّارُ

अल्लाहने भराबियोंसे उसके, जो यावबाजियों की लोगोंने, और घेर लिया फिरओनियोंको अजाबकी तबाहीने (४५) आग पर

يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ

पेश डिये जाते हैं वोड लोग सुब्हो शाम. और जिस दिन क्यामत काठम डोगी... कि “जोंक दो फिरओनियों

فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۖ وَإِذْ يَتَحَايَجُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعْفَاءُ

को सप्त अजाबमें” (४६) और जब हुजहत बाजी करेंगे जहन्नममें, तो कहेंगे उनके कमजोर लोग उन्हें,

لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَمَا لَأَنْتُمْ مُعْتَدُونَ عَنَّا نَصِيبًا

जो भडे बनते थे, कि बेशक हम तो थे तुम्हारे पीछे चलनेवाले, तो क्या तुम लोग डटा लोगे हमसे कुण

مِّنَ النَّارِ ۗ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ

डिरसा आगसे? (४७) जवाब दिया जो भडे बनते थे, कि “वाकेआ तो यह है हम सभी उसीमें हैं.” बेशक अल्लाहने कैसला

بَيْنَ الْعِبَادِ ۗ وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لَخَرْنَتْ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ

करमा दिया बन्दोंके दरमियान (४८) और बोल पडे जो आगमें हैं जहन्नमके दारोगोंको, कि “हुआ करो अपने रबसे

يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۗ قَالُوا أَوْلَمْ تَكُنْ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ

कि उल्का करटे हमसे अेक दिन अजाब ” (४९) उन्होंने पूछा कि “क्या नहीं आते थे तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल

بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا بَلَىٰ ۗ قَالُوا فَادْعُوا ۗ وَمَا دَعْوُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي

शैशन निशानियोंके साथ.” सब बोले, “क्यूं नहीं.” तो जवाब दिया, कि “फिर तुम्हें हुडाई मयाओ.. और नहीं है

ضَلِيلٍ ۗ إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ

काफ़िरोंकी हुआ मगर बेकार (५०) बेशक हम ज़रूर मदद करमाअेंगे अपने रसूलोंकी और उनकी जो ईमान लाये, हुन्यावी



اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ

अव्लाह हे जिसने बनाया तुम्हारे लिये रातको कि आराम करो उसमें, और दिनको सभ कुछ दिभा देने

اللَّهُ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿۴۱﴾

वाला. बेशक अव्लाह फ़ज़लवाला है लोगों पर, लेकिन अक़्थर लोग नाशुक हैं (६१)

ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ ۖ لَآ إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآئِنِّي تُؤْفَكُونَ ﴿۴۲﴾

यह है अव्लाह, तुम्हारा रब, पैदा करमानेवाला हर याहेका.. नहीं है कोरि पूजनेके काबिल उसके सिवा, तो कहां औंधाये जाते हो (६२)

كَذَلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿۴۳﴾ اللَّهُ الَّذِي

ईसी तरह औंधाये गये वोह, जो अव्लाहकी आयतोंका ईकार करते थे (६३) अव्लाह है जिसने बनाया

جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ

तुम्हारे लिये जमीनको ठहरनेको और आस्मानको कुब्बा, और सूरत बनाई तुम्हारी तो उसीन बनाया तुम्हारी

وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ ۖ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ رَبُّ

सूरतोंको, और रोजी दी तुम्हें पाकीजा. यह है अव्लाह तुम्हारा रब. तो बरकतवाला है अव्लाह, सारे जहान

الْعَالَمِينَ ﴿۴۴﴾ هُوَ الْحَيُّ ۖ لَآ إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ

का पालनहार (६४) वोही जिन्दा है, नहीं है कोरि पूजनेके काबिल उसके सिवा, तो हुडार्थ हो उसको मुजिबसाना अकीदेसे.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿۴۵﴾ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ

सारी उम्ह अव्लाहकी, रब सारे जहानका (६५) केह दो, कि “बेशक मैं रोका गया हूं, कि पूजूं जिनकी

تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُمِرْتُ

हुडार्थ देते हो तुम अव्लाहके भिलाफ़, जबकि आ गयीं मेरे पास रौशन निशानियां मेरे रबकी तरफसे. और मुझे

أَنْ أَسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿۴۶﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ ثُمَّ

हुकम दिया गया है कि सर तुका हूं रब्बुल आलमीनके लिये” (६६) वोही है जिसने पैदा करमाया तुम्हें भिडीसे, फिर

مِنْ نَفْسَةٍ ثُمَّ مِنْ عَظْمَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا

अक कतरेसे, फिर बोथउसे, फिर निकाला करता है तुम्हें बच्चा, फिर ताकि पड़ोयो

أَسْدَكُمْ ثُمَّ لَتَكُونُوا شُيُوخًا ۖ وَمِنْكُمْ مَن يُتَوَاتَىٰ مِنْ قَبْلِ

अपने जोरको, फिर ताकि हो जाओ बुढ़े. और कोरि है जो वफ़ात दिया जाता है पहले ही,

وَلِتَبْلُغُوا أَجَلَ مَسَىٰ وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿۶۷﴾ هُوَ الَّذِي يُحْيِي

और ताकि पछोय जाओ अपनी मुदते मुअय्यनको, और ताकि तुम अकलसे काम लो (६७) “वोही है जो जिन्दा इरमाओ

وَيُبَيِّتُ ۚ فَاذًا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿۶۸﴾ أَلَمْ

और मारे.” युना-चे जब थाहा किंसी अम्रको, तो अस इरमा देता है उसे, कि “हो जा” तो वोह हो “जाता है” (६८) क्या नहीं

تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَمْجَدُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصِرُّونَ ﴿۶۹﴾ الَّذِينَ

देभा तूने उन्हे जो जगडे निकावते हैं अल्लाहकी आयतोंमें, कि कहां इर दिये गये (६९) जिन्होंने

كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿۷०﴾

जुदवाया किताबको, और जिस चीजके साथ भेजा हमने अपने रसूलोंको.. तो जल्द ही मा'लूम कर देंगे (७०)

إِذِ الْأَعْلَىٰ فِي أَعْيُنِهِمُ السَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿۷१﴾ فِي الْحَمِيمِ ۚ

जब कि तौक उनकी गरदनमें होंगे, और जञ्चरें, घसीटे जायेंगे (७१) भौलते पानीमें..

ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿۷२﴾ ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ آيِنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿۷३﴾

फिर जहन्नममें जोंक दिये जायेंगे (७२) फिर इरमान होगा उन्हे, कि “कहां हैं जिनको शरीक बनाते थे तुम ? ” (७३)

مَنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ

अल्लाहके भिवाइ. जवाब देना पडा उन्हे कि “वोह तो भो गये हमसे”, अल्लिह हम दुहाई देते ही न थे पडले

شَيْئًا ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿۷४﴾ ذُرِّيَّتُمْ مَّا كُنتُمْ تَفْرَحُونَ

किंसीकी. इसी तरह भेराह रभता है अल्लाह काकिरोंको (७४) यह भदवा है उसका जो तुम भुश होते

فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْرَحُونَ ﴿۷५﴾ أَدْخُلُوا أَبْوَابَ

थे जमीनमें नाइकसे, और जो इतराया करते थे (७५) दाभिल हो जहन्नमके

جَهَنَّمَ خَلِيدِينَ فِيهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَىٰ الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿۷६﴾ فَاصْبِرْ إِنَّ

दरवाजोंमें हमेशाके लिये इसमें. तो कितना भुरा ठिकाना है मगइरोंका (७६) तो तुम सभ्र करते रहो, बेशक

وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۚ فَأَمَّا نُرْيِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعْدُهُمْ أَوْ تُوقِنُكَ

अल्लाहका वा'दा उक है. तो ज्वाह उम दिभा हें तुम्हें भी कुछ, जिसका वा'दा इरमाते हैं उन्हे, या वक़त हें तुम्हें,

فَأَلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿۷७﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّن

वोह तो हमारी तरह लौटाओ जायेंगे (७७) और बेशक भेजा हमने अल्लोतसे रसूल तुमसे पडले, उनमेंसे वोह

قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ

ہے کہ جینکے واگےآت ناقلیل فرما دیتے ہمنے توم پر، اور کوفہ ہے، کہ “کورآنمے جینکا لیک نہی (بےآ توم پر۔” اور

لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ فَمَنْ

کیرسی رسولکا کام نہی، کہ کوفہ نیشانی لایے مگر اعلواکے لومسے۔ تو جہاں آ گیا اعلواکے آجاہ، کسلا کر دیا

۴۰۰

بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ۞ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ

گیا بیلکول لک، اور ہسارا وٹایا وہاں باتیلواہوںنے (۳۷) اعلواکے ہے، جیسنے پےدا فرمایا تومہارے لیتے

الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۞ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَ

یوہاہے کہ کوفہ سواہی کرو ونکی اور کوفہ ہاتے رہو (۳۷) اور تومہارے لیتے ونمے ہولتہرے کوفہ ہے، اور

لِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفَلَاحِ

تاکی پلوںیو ون پر لاد کر اپنے دیکے مکسدکو، اور ون پر اور کشتیوں پر

تُحْمَلُونَ ۞ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۞ فَأَمَّا آيَاتِ اللَّهِ تَتَذَكَّرُونَ ۞ أَفَلَمْ

سوار کیے آہو (۴۰) اور دیکھتا رہتا ہے تومکو اپنی نیشانیوں۔ تو اعلواکے کین کین نیشانیوں کا ککار کرتے رہوگے (۴۱) تو

يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ

کیا نہی سکر کیا زمینمے، کہ دیکھ لیتے کہ کسسا انجم لویا تا ونکا، جو ونسے

قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرًا مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَأَثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا

پہلے ہے۔ ہے ول کھی لیاہا ونسے اور کھی ہٹ کر کولت اور زمینمے کھی نیشانیوںمے ون

أَعْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۞ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

سے، تو نہی کام آہے ونکے جو ول کھاتے ہے (۴۲) یوںآہا جب لے آہے ونکے پاس ونکے

بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِنْدَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا

رسول روشن نیشانیوں، تو ول ہوش رہے جو کوفہ ونکے پاس تا کلم، اور آ پدا ونکی پر

كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۞ فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ

جیسکا مچاک وڈاتے ہے (۴۳) کیر جب دیکھ لیا ہمارا آجاہ، ہول پڑے کہ ہمنے مان لیا آک

وَحَدَّاهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ۞ فَلَمْ يَكُنْ

اعلواکے، اور ککار کر دیا جیسے ہم شریک ہناتے ہے (۴۴) تو ن کام آسکا ونکے

يَنْفَعُهُمْ إِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهُ الَّتِي قَدْ

उनका अब मान जना, जब कि देभ युके हमारा अजाब. अल्लाहका दस्तूर जो होता रहा

خَلَّتْ فِي عِبَادِهِ ۱ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكُفْرُونَ ۲

उसके भन्दोंमें. और भसारा उहासे वहां काकिर लोग (८५)

سُورَةُ حَمَّ السَّجْدَةِ ۴۱  
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

सूरअे हा-मीम सज्दा मकिथ्या

नामसे अल्लाहके बडा महरबान भग्शनेवाला

आयात ५४ रुकूअ ६

حَمَّ ۱ تَنْزِيلٌ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۲ كَتَبَ فُصِّلَتْ آيَاتُهُ

हा-मीम.. (१) यह उतारा हे महरबान भग्शनेवालेकी तरफसे (२) औसी किताब, कि मुक़स्सल इरमारु गर्थ जिनकी आयते.

قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۳ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۴ فَأَعْرَضَ

कुरआन, अरबी ज्बान, उनके लिये जो दाना हैं (३) भुश भबरी देनेवाला और उर सुनानेवाला. तो मुंड इरे लिया उनके

أَكْثَرَهُمْ فَهُمْ لَا يَسْعَوْنَ ۵ وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي آكْتَةٍ مِمَّا

भोडतेरोंने, तो वोड सुनते ही नही (४) और भोले, कि “हमारे दिल गिलाइंमें छुपे हैं उससे, जिसकी तरफ

تَدْعُونَا إِلَيْهِ وَفِي آذَانِنَا وَقُرْءَانٍ مِّنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ

तुम भुला रहे हो हमें, और हमारे कानोंमें अंत है, और हमारे दरमियान और तुम्हारे दरमियान पर्दा पडा है,

فَاعْمَلْ إِنَّا عَمِلُونَ ۶ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ

तो तुम अपनी करो, हम बिलाशुभल अपनी करनेवाले हैं” (५) जवाब दो, कि “मैं बस येदरे मोहरेवाला हूँ जैसे तुम,” वही की जाती

أَنَّ الْمَلَائِكَةَ إِلَهُ وَوَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا ۷ وَوَيْلٌ

हे मेरी तरफ, कि तुम्हारा मा’बूद सिर्फ मा’बूदे वाहिए है, तो सीधी राह चलो उसकी तरफ, और मज्फिरत मांगो उससे, और हलाकी

لِلْمُشْرِكِينَ ۸ الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ

हे शरीक बनानेवालोंकी (६) जो न जकात दें, और वोड आभिरतके

كُفْرُونَ ۹ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ

मुन्किर हैं (७) भेशक जो ईमान लाअे और करनेके काम किये, उनहीके लिये है भवाभ

غَيْرُ مَسْنُونٍ ۱۰ قُلْ أَيُّكُمْ لَنْكُفِرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ

भेडद (८) पूछो कि क्या तुम नही मानते उसे, जिसने पैदा इरमाया जमीनकी

فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَنْدَادًا ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿۹﴾

दो ही दिनमें ? और बनाते हो उसके बराबर वाले. ये हे रबुल आलमीन (९)

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ

और गाड दिये उसमें पहाड़ोंके लंगर उसके ओपरसे, और बरकत दी उसमें, और मुकदर करमा हें उसमें

فِيهَا أَقْوَامًا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ﴿۱۰﴾ ثُمَّ

गिजाअें यार ही दिनमें सहीड सहीड. पूछनेवालोंके लिये (१०) फिर तवज्जोड

اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ

करमाई आस्मानकी तरफ जबकि वोड धुवां हे, तो करमाया उसे और जमीनको, कि “दोनों

اِئْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿۱۱﴾ فَقَضَاهُنَّ

हाजिर हो भुशीसे या दभावसे.” दोनों बोले, कि “हम हाजिर हो गये भुशीसे.” (११) तो पूरा करमाया उन्हें

سَبْعَ سَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۖ

सात आस्मान दो ही दिनमें, और हुकम भेजा हर आस्मानमें उसके कामका.

وَنَزَّيْنَا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِصَابِرِينَ ۖ وَحَفِظْنَا ذَٰلِكَ

और संवारा हमने करीबवाले आस्मानको यरागोंसे. और निगहबानीको. ये हे मुकदर करमाना

تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿۱۲﴾ فَإِنِ اعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ

ठज्जतवाले ठल्मवालेका (१२) फिर भी अगर मुंड करे रहे, तो केड दो, कि “उरा युका में तुम्हें

طُعْقَةً مِّثْلَ طُعْقَةِ عَادٍ وَشَوْدًا ۗ إِذْ جَاءَتْهُمْ

कडकसे,” जैसे आद व षमूदकी कडक (१३) जब कि आते रहते थे उन

الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ إِلَّا تَعْبُدُوا

के पास रसूल उनके आगे और पीछेसे, कि मत पूजो

إِلَّا اللَّهَ ۖ قَالُوا كَوْشَاءِ رَبَّنَا لَا نُنْزِلُ مَلَائِكَةً فَإِنَّا

अद्लाडके सिवा. सभ बोले थे कि अगर यादता हमारा रब तो जरूर उतारता फिरशतोंको, हम लोग तो

بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كُفْرًا ۖ فَمَا عَادَ فَاسْتَكْبَرُوا

यकीनन जिस थीजके साथ तुम भेजे गये हो मुन्डिर हें (१४) तो आद तो बडे बनते रहे,

فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ط

जमीनमें नाइक, और केहते कि कौन बढकर हे हमसे कुव्वतमें.

أُولَئِكَ يَرَوْنَ أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ

क्या नहीं सूझा कि बिवाशुबल जिस अल्लाहने पैदा करमाया था उन्हें, वोइ ज़्यादा कुव्वतवाला हे उन

قُوَّةً وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۝۱۵ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

से. और वो हमारी आयतोंका इन्कार करते थे (१५) तो छोड दिया हमने उन पर

رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ مَّحْسُوتٍ لِنُرِيَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ

आंधी सप्त हंडी, मन्डूस दिनोंमें, कि यभाहे उन्हें रुस्वाँका अजाब

فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ وَهُمْ لَا

दुन्यवी जिन्दगीमें. और यकीनन आभिरतका अजाब ज़्यादा रुस्वा करनेवाला हे, और वोइ मद्द न

يُنصِرُونَ ۝۱۶ وَأَمَّا سُودٌ فَهَدَىٰ لَهُمْ فَاسْتَجَبُوا لِلْعَبَىٰ

किये जाअंगे (१६) और समूह, तो राइ बताई हमने उन्हें, तो पसन्द किया उन्होंने अर्धे

عَلَى الْهُدَىٰ فَآخَذَتْهُمْ سَعْيًا الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا

रहनेको राइ देभनेसे, तो पकड लिया उन्हें जिल्लतके अजाबकी कडकने, जो वोइ

كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝۱۷ وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا

कमा चुके थे (१७) और बचा लिया हमने उन्हें जो ईमान लाओ और उरा

يَتَّقُونَ ۝۱۸ وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ

करते थे (१८) और जिस दिन हाँके जाअंगे अल्लाहके सारे दुश्मन आगकी तरफ, तो वोइ रोक

يُؤْتَرَعُونَ ۝۱۹ حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَعْرُهُمْ

रोक कर जमा किये जाअंगे (१९) यहाँ तक कि जब आ गये वहाँ, तो गवाही देने लगे उन पर उनके कान,

وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝۲۰ وَقَالُوا

और उनकी आंभें, और उनकी भावें, जो कुछ वोइ करते थे (२०) और लगे केहने

لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي

अपनी भावोंको, कि “क्यूँ गवाही दी तुमने हम पर.” भावें बोलीं कि “गोयाई बपशी हमको अल्लाहने,”

أَنْطَقَ كُلُّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَإِلَيْهِ

जिसने गोयाई ही है हर अकको, और उसने पैदा करमाया तुम्हें पहली बार, और उसीकी

تُرْجَعُونَ ﴿۲۱﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَرْوُونَ أَنْ يَشْهَدَ

तरफ़ लौटाओ जाओगे (२१) और तुम छुपा नहीं सकते थे कि गवाही दें

عَلَيْكُمْ سَمْعَكُمْ وَلَا أَبْصَارَكُمْ وَلَا جُلُودَكُمْ وَلَكِنْ

तुम पर तुम्हारे कान, और न तुम्हारी आंभें, और न तुम्हारी भावें, लेकिन गुमान

ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿۲۲﴾ وَذِكْرُكُمْ

रખते थे, कि अल्लाह जानता ही नहीं बहोतसी चीजोंकी जो कर रहे हो (२२) और यह है तुम्हारा

ظَلْمُكَ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَكُمْ فَأَصْبَحْتُم مِّن

गुमान, जो रખते थे अपने रभसे, तबाह कर दिया उसने तुम्हें, तो हो गये तुम

الْخَسِرِينَ ﴿۲۳﴾ فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ

भसारेवालोंसे (२३) अब अगर सब्र भी करें, तो जहन्नम ठिकाना है उनका. और अगर

يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ﴿۲४﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ

भुशामद करें, तो नहीं हैं वोह भुशामद कबूल किये दुओंसे (२४) और मुतअय्यन करमाया हमने उनके

قُرَيْنًا لَهُمْ مِّمَّا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ

कुछ साथियोंकी, तो भुभ सूरत बनाया उनकी नजरमें जो सामनेकी हुन्या है, और जो बा'दकी आपिरत है, और दुरुस्त

الْقَوْلُ فِي أُمِّهِمْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ

हो गई उन पर बात, उन्ही उम्मतोंमें हो कर जो गुजर चुकी उनसे पहले, जिन्नात व इन्सानसे.

ع ۱۲

إِنَّهُمْ كَانُوا خَسِرِينَ ﴿۲۵﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا

बेशक वोह भसारेवाले थे (२५) और बोले जिन्होंने कुछ किया है,

تَسْمَعُوا هَذَا الْقُرْآنَ وَالنَّغْوَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ﴿۲۶﴾

कि "मत सुना करो इस कुरआनको, और बेहूदा शोर मचाया करो उसमें, कि ज्ञत जाओ" (२६)

فَلَنْذِيْقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا ۖ وَلَنْجِزِيَنَّهُمْ

तो ज़रूर यभाओगे हम उन्हें जिन्होंने इन्कार किया है सप्त अजाब. और यकीनन भदला देंगे उन्हें

أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۲۵﴾ ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ

उनके बुरेसे बुरे कामका जो करते थे (२५) यह है अल्लाहके दुश्मनोंकी सजा आग.

لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿۲۶﴾

उनका उसमें हमेशाका घर है. सजा है जो वोड हमारी आयतोंका ईन्कार करते थे (२६)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذِينَ أُضْلِنَا مِنْ

और हुआ करने लगे जिन्होंने कुछ किया है, कि “परवरदिगारा दिभा दे हमें उन्हें, जिन्होंने गुमराह किया था हमें

الْجَنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونُوا مِنَ

जिन्नात व ईन्सानसे, कि कुछ डालें हम उनकी अपने पांवके नीचे, ताकि वोड हो जहाँ सबसे

الْأَسْفَلِينَ ﴿۲۷﴾ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا

नीचोंसे” (२७) भेशक जिन्होंने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर जम गये,

تَنْزِيلٌ عَلَيْهِمُ الْمَلِكَةُ أَلَّا تَخْفُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَابْتَهِرُوا

उतरते हैं उन पर इरिशते, कि मत डरो और रञ्छदा न हो, और भुश हो

بِالْحِجَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿۲۸﴾ نَحْنُ أَوْلَىٰ بِكُمْ فِي

जानो उस जन्तसे, जिसका तुमसे वा’दा किया जाता था (२८) हम तुम्हारे दोस्त हैं

الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۗ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهُ

दुनियावी जिन्दगीमें और आभिरतमें. और तुम्हारे लिये उसमें जिसको चाहे तुम लोगों

أَنفُسِكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿۲۹﴾ نُزِّلَ مِنَ عَفْوٍ

का ज, और तुम्हारे लिये उसमें जो कुछ मांगो (२९) मरहमानी है गइरु

رَحِيمٍ ﴿۳०﴾ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ

रहीमकी तरफसे (३०) और कौन ज़्यादा बेहतर है बातमें उससे ? जिसने बुलाया अल्लाहकी तरफ और काम किया

صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿۳१﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ

लियाकतवाला, और केह दिया कि बिलाशुभमें मुसलमानोंसे हूँ (३१) और नहीं बराबर हो सकती नेकी

وَلَا السَّيِّئَةُ ۗ إِذْفَعُ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ

व बदी. हटाया करो हटानेकी चीजको निहायत लबाईसे, तो उस वक्त वोड, कि तुम्हारे दरमियान

وَبَيِّنَةٌ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٣﴾ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا

और उसके दरमियान दुश्मनी है, गोया कि दोस्त है रिश्तेदार (३४) और नहीं दिया जाता यह, मगर

الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٤﴾ وَإِنَّمَا

जिन्होंने सधसे काम लिया. और नहीं पाते यह, मगर बड़े नसीबवाले (३५) और अगर

يَنْزَعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ

कोंसे तुम्हें शैतानकी तरफसे कोई कोंचा, तो पनाह मांगले अल्लाहकी. बेशक वोही सुननेवाला

الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾ وَمِنَ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا

ईल्मवाला है (३६) और उसकी निशानियोंसे है रात और दिन, और सूरज और चाँद, मत

تَسْجُدُ وَاللشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدْ وَابْتَهِمُ الَّذِي خَلَقَهُنَّ

सजदा करो सूरजका और न चाँदका, और सजदा करो अल्लाहका, जिसने पैदा इरमाया उन्हें,

إِنَّ كُنْتُمْ آيَاةً تَعْبُدُونَ ﴿٣٦﴾ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ

अगर तुम उसीकी ईबाहत करते हो (३७) फिर भी अगर डींगकी लीं, तो जो

عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ﴿٣٧﴾

तुम्हारे रबके पास हैं, तस्बीह बोलते उसकी रात और दिन, और वोह नहीं थकते (३८)

وَمِنَ آيَاتِهِ أَنَّا نُنزِلُ الْمَاءَ فِي حَبَشَةَ فَأَنزَلْنَا عَلَيْهَا

और उसकी निशानियोंसे है, कि बिलाशुबह तुम देभ रहे हो जमीनको दबी पडी, फिर जब उतारा हमने उस पर

الْمَاءَ اهْتَرَّتْ وَرَبَّتْ ۚ وَإِنِّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمَجِي الْمَوْتَى ۚ

पानी, तो फिर फिराई और बढ़ी. बेशक जिसने उसको जिन्दा किया यकीनन मुर्दोंको जिलावेवाला है.

إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي

बेशक वोह हर याहे पर कुदरत रभनेवाला है (३९) बेशक जो टेढी याल यलें हमारी

آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْهَا ۚ أَفَسَوْفَ يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ قَوْلُ

आयतोंमें, वोह नहीं पोशीदा हैं हम पर. तो क्या जो डाल दिया जाये आगमें वोह बेहतर है ? या

يَأْتِيٰ أُمَّتًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ أَعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ

जो आये बहालते अम्न, क्यामतके दिन. कर डालो जो जो याहे. बेशक वोह जो कुछ करो

بَصِيرٌ ۝۳۰ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَاِنَّهٗ

देभ रडा हे उन्हें भी (४०) जिन्होंने ठन्कार कर दिया नसीहतका जबकि आर्थ उनके पास, और बिलाशुभड यड

لِكِتَابٍ عَزِيْزٍ ۝۳۱ لَا يَأْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ

यकीनन धज्जतवाली किताभ हे (४१) नहीं आ सकता बातिल उसके आगे और

لَا مِنْ خَلْفِهٖ ۝۳۲ تَنْزِيْلٍ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ۝۳۳ مَا يُقَالُ

न पीछेसे. उतारी छूठ छिकमतवाले उम्दवालेकी तरफसे (४२) न कडा जायेगा

لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ

तुम्हें, मगर जो कडा गया रसूलोंको पहले तुमसे. बेशक तुम्हारा रभ यकीनन

مَغْفِرَةٍ ۝۳۴ وَذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ۝۳۵ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَبِيَّا

मगिरेतवाला, और दईनाक अजाबवाला हे (४३) और अगर बनाते उम उसे कुरआन अजमी जभानका, तो ज़र

لَقَالُوْا لَوْلَا فَصَّلَتْ اٰيٰتُهٗ ۝۳۶ اَعْجَبِيٌّ ۝۳۷ وَعَرَبِيٌّ ۝۳۸ قُلْ هُوَ

केडते, कि “कतून साइ साइ बोली गर्थ उसकी आयतें... “क्या अजमी पैगाम और अरबी पैगाम्बर?” केड दो, कि “वोड उन

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى ۝۳۹ وَشِفَاۗءٌ ۝۴० وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْ

के लिये, जो मान गये, छिदायत व शिफा हे. और जो न मानें, उनके

اٰذَانِهٖمْ وَقُرْءُوْهُ عَلَيْهِمْ عَنِّيْ ۝۴१ اَوْلٰٓئِكَ يُنَادُوْنَ مِنْ

कानोंमें डाट लगी हे, और उन पर अंधराया डुवा हे. जैसे वोड लोग पुकारे जाते हैं

مَكَاٰنٍ بَعِيْدٍ ۝۴२ وَلَقَدْ اَتَيْنَا مُوْسٰى الْكِتٰبَ فَاخْتَلَفَ

दूर जगडसे (४४) और बेशक दी हमने मूसाको किताभ, तो जगडा निकाला गया

فِيْهِ ۝۴३ وَكُلَّ كَلِمَةٍ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقَضٰى بَيْنَهُمْ ۝

उसमें. और अगर न छोती अेक भात जो पहले छो चुकी तुम्हारे रभकी तरफसे, तो ज़र हैसला कर दिया जाता उनके दरमियान.

۝۴४ وَرَاٰهُمْ لَفِيْ شَكِّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝۴५ مَنْ عَمِلْ صٰلِحًا فَلِنَفْسِهٖ

बेशक वोड ज़र शकमें हैं उसकी तरफसे, तरदुदमें पडे (४५) जिसने लियकत मन्दीकी, तो अपने लवकेकी,

۝۴६ وَمَنْ اَسٰءَ فَعَلَيْهَا ۝۴७ وَمَا رَبُّكَ بِظٰلِمٍ لِّلْعٰبِدِيْنَ ۝

और जिसने भुराईकी तो उसी पर हे. और नहीं हे तुम्हारा रभ जुल्म करनेवाला, भन्दीके लिये (४६)